SUNDAY

पत्रिका

just भोपाल

एसवी पॉलिटेक्निक कॉलेज में शनिवार को कविता संग्रह का विमोचन करते अतिथि।

रिश्ता कोई कहने को अपना नहीं...

just रिपोर्टर

justreporter.bhopal@patrika.com

रिश्तों की गर्मी में न उलझो, इसमें पड़े तो शीशे से पिघल जाओगो। रिश्ता कोई कहने को अपना नहीं, इन्हीं रिश्तों से बंधे रस्में निभाते रहो। शनिवार को एसवी पॉलिटेक्निक में रिश्तों पर लिखी यह संवेदनशील कविता योगिता लालजी ने सुनाई। मौका था कविता संग्रह 'सच की परछाईयां' पुस्तक के विमोचन का। कवियत्री योगिता लालजी और पवित्र लालजी रचित इस पुस्तक का विमोचन विभांशु जोशी और प्रो. विजय जोशी ने किया। इय दौरान योगिता लालजी ने दूसरी कविता भूल जाने का दावा तो बहुत करते हो, चलो इसी बहाने से याद तो करते हो। रस्में मोहब्बत न निभाई तो क्या रस्में बेरुखी तो वफा से निभाया करते हो का भी पाठ किया। पवित्र लालजी ने कविता दुहाई का पाठ कुछ इस अंदाज में किया, देखकर हमको वो किनारा करने लगे, बेवफाई का सबब पूछा तो हंसने लगे। वादे भुलाकर जमाने की दुहाई देने लगे। इस मौके पर बतौर मुख्य अतिथि विभांशु जोशी ने कहा कि इन कविताओं में सामाजिक दृष्टिकोण समाया हुआ है।